FREE LIBRARIES NETWORK
India & South Asia

फ्री लाइब्रेरीज ज़िंदाबाद

नेटवर्क समाचार का त्रैमासिक दौर **अंक 8 | अक्टूबर - दिसंबर**

पुस्तकालय विशेषकर ऐतिहासिक रूप उत्पीड़ित समुदायों के लिए एक स्वतंत्र और सुरक्षित स्थान ?

पुस्तकालय क्या हैं? क्यों हैं? किसके लिए हैं? भारतीय दृष्टिकोण में जब हम एक पुस्तकालय को देखते हैं, तो एक छवि उभरती हैं, ऐसे पुस्तकालय के रूप में, जो केवल अकादमिक किताबों से भरी हो, जिसके लिए सदस्यों को एक न्यूनतम फीस वहन करना पड़ता हो ,जहाँ कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों तक पहुँच हों, जो ज्यादातर विश्वविद्यालयों/संस्थानों में हैं, भारत सार्वजनिक पुस्तकालय, आधुनिक समय में जनता की दृष्टि में संग्रहालय की तरह उदेश्यित हो गया, जहाँ जाकर आलमारी में रखी किताबों को हम केवल देख सकते हैं.

हमारा मानना हैं ,निशुल्क पुस्तकालय सभी का अधिकार हैं,जहाँ हर पाठक/ सदस्य अपनी मन पसंद की किताबें पढ़ सके ,पुस्तकालय में बैठ सके ,अपने समुदायों के हकों और कठिनाइयों की बात कर सके ,विशेषकर हाशिये के समुदायों को जिन्हें सदियों से ऐसे शक्तिशाली अवसरों और संसाधनों दूर रखा गया

एक स्वतंत्र और मुफ्त पुस्तकालय के रूप में हमें "फूले ,अंबेडकर. शाहू, पेरियार और फातिमा" के संघर्षों को पढ़ने का मौका मिले जिन्होंने ऐसे समुदाय के लिए एक जगह बनायीं जहाँ आज आपने आवाजों को आगे ला सकते है ,जिनकी लड़ाई शोषण के विरुद्ध- शिक्षा, स्वतंत्रता ,पुस्तकालय ,पढनें की अधिकार की रही हैं

फ्री लाइब्रेरीज नेटवर्क के पुस्तकालय के रूप में हम एक साथ, समान अधिकार के लिए एक साथ हैं, जहाँ सभी बच्चों, समुदायों विशेषकर वंचित बच्चे सहजता से आघात से उबरते हैं, एक सुरक्षित स्थान पर एक साथ आते हैं, हिंसा का विरोध करते हैं और खुशी और मुक्ति का अनुभव करते हैं, और अपनी पसंद की किताबें पढ़ते हैं, खेलते हैं और अपने विचारों और अवसरों का पता लगाते हैं।

एक पुस्तकालय समूह के रूप में, हम अपने जैसा और भी पुस्तकालय बनाने का सपना देखते हैं -जो मुक्त (Free) और जाति विरोधी (Anti-caste) हो, जहां ऐतिहासिक रूप से उत्पीड़ित लोगों, समुदायों और बच्चों को सोचने, पढ़ने, सीखने और अपने विचारो को साझा करने के लिए एक स्वतंत्र, सुरक्षित, समावेश (Inclusive) जगह मिल सके, जहां बच्चे ,युवा ,महिलाएं सभी अपने संभावनाओं के पंख फैला सके,अपने अवसरों का पता लगा सके।

अमित गौतम
वर्किंग ग्रुप-एफएलएन
सावित्रीबाई फुले ग्राम पुस्तकालय और संसाधन केंद्र, उत्तर प्रदेश

WE ARE FLN!

एफ.एल.एन सदस्य निःशुल्क या मुफ़्त पुस्तकालयों के निर्माण, संचालन और प्रचार के लिए काम करते हैं जो जाति, वर्ग, धर्म, लिंग और यौन पहचान या विकलांगता के भेद-भाव के बिना सभी का स्वागत करते हैं। हम सभी को पुस्तकों को मुफ़्त पहुँचाने और उन नए पाठकों को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं, जिनके पास शायद स्वयं किताबें पढ़ पाने के साधन अभी नहीं है।

वेबसाइट- https://www.fln.org.in/. | **ट्विटर:** @FreeLibNetwork | इंस्टा:: @freelibrariesnetworkfln |**फेसबुक** @freelibrariesnetworkFLN **You Tube**: Free Libraries Network FLN ईमेल::freelibrariesnetworkfln@gmail.com **और पुस्तक वितरण के लिए**: booksforallFLN@gmail.com

एफ. एल. एन कार्यक्रम और कार्यशालाएं

आवासीय कार्यशालाएँ- पुस्तकालयों का अधिकार

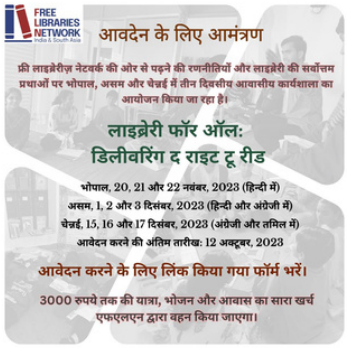

छवि: आवासीय कार्यशालाओं के लिए आवेदन हेतु पोस्टर

फ्री लाइब्रेरीज़ नेटवर्क के पास 'लाइब्रेरी फॉर ऑल: डिलीवरिंग द राइट टू रीड' शीर्षक से 3-दिवसीय आवासीय कार्यशालाओं की मेजबानी और संचालन करने का एक अद्भुत अवसर था। जे.सी.बी के समर्थन के लिए धन्यवाद, ये कार्यशालाएं पूरी तरह से निःशुल्क हैं और एफ.एल.एन प्रतिभागियों की यात्रा, रहने और भोजन की लागत भी वहन कर सकता है। कार्यशाला सभी के लिए उत्कृष्ट और समावेशी पुस्तकालय सेवाओं के लिए पढ़ने की रणनीतियों, पुस्तकालय की सर्वोत्तम प्रथाओं और मानकों और दिशानिर्देशों पर प्रशिक्षण प्रदान करती है। यह एफ.एल.एन पुस्तकालयों के लिए एक-दूसरे का समर्थन करने, सीखने और विचार करने के लिए एक जगह है कि मुफ्त पुस्तकालय क्यों मायने रखते हैं और जिन समुदायों को यह सेवा प्रदान करता है उन्हें सशक्त बनाने में इसकी भूमिका क्या है। कार्यशालाएँ गहन चिंतन को प्रोत्साहित करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। वे अनुभव से सीखने पर भी जोर देते हैं और विभिन्न कार्यक्रमों का अभ्यास करने और उन्हें मॉडल करने के लिए समय देते हैं। पुस्तकालय प्रथाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है जो पहली पीढ़ी के पाठकों, बहिष्कृत समुदायों का स्वागत करते हैं और जो न्यायसंगत और समावेशी स्थानों को बढ़ावा देते हैं। प्रत्येक कार्यशाला कई भाषाओं में वितरित की जाती है। अब तक दो कार्यशालाएँ - एक भोपाल (मध्य प्रदेश) में और दूसरी धेमाजी जिले (असम) में हो चुकी हैं। जनवरी में इस कार्यशाला की तीसरी और आखिरी किस्त चेन्नई में होगी।

भोपाल|20-22 नवंबर

महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड, गुजरात, उत्तराखंड, दिल्ली, मध्य प्रदेश, बिहार से 43 से अधिक एफएलएन पुस्तकालय लाइब्रेरी प्रथाओं, पढ़ने की रणनीतियों और जिम्मेदारियों के बारे में गाने, बजाने, बहस करने, प्रतिबिंबित करने और सीखने के लिए एक साथ आए। एक निःशुल्क पुस्तकालय.

छवि: भोपाल वर्कशॉप से ग्रुप फोटो

"कहानी सुनाने से पहले बच्चों से चर्चा की जाती है ताकि बच्चे किताब से जुड़ सकें और कविता भी करवानी चाहिए ताकि बच्चों का जुड़ाव और ज्यादा बड़े लाइब्रेरी में और किताबों से. -अलग-अलग *activities* भी करवा सकते हैं लेकिन ध्यान रहे कि हर *activity* किताब के संदर्भ से जुडती हुई हो. गंभीर विषयों की किताबों पर रीड *aloud* भी किया जा सकता परंतु ध्यान रखें कि कितने रोचक ढंग से उसको प्रस्तुत करना है. फ्री पुस्तकालय में किसी प्रकार के शुल्क या दण्ड भरने के हर प्रावधान से मुक्त होने चाहिए फ्री लाइब्रेरी." - **निशा त्रिपाठी सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख ओपन लाइब्रेरी**

"3 दिन, भोपाल में, सबके साथ, नाश्ते से लेकर डिनर तक, सब कुछ साझा करना, एक खूबसूरत अनुभव रहा।
कभी न मिट सकने वाली यादों को बनाने के लिए, 3 दिन तक मिलकर अपने विचारों, अनुभवों को साझा कर व्यवहारिक, नैतिक, कौशल आधारित ज्ञान का निर्माण कर मुझे इतना कुछ सिखाने के लिए, जिसे मैं अपने समुदाय में जाकर बांट पाउँगा, इस सब के लिए शुक्रिया सभी साथियों का।" -**पंकज, रंग कारवां, उत्तरकांड**

"लाइब्रेरी लगाते समय हमें पहले बच्चों को स्वागत करना चाहिए और एक कोई भी संबंधित मज़ेदार सब्जेक्ट से जुड़ी एक्टीविटी करानी चाहिए जिससे माहौल बना सकें.लाइब्रेरी में रीड अलाउड कराने से पहले हम खुद कहानी को पढ़े पहले और फिर कोशिश करें कि उसकी पहले लेसन प्लान बनाए ताकि हम बच्चों के साथ कैसे ले जाने वाले हैं इस कहानी को यह स्पष्टता हमें स्वयं को हो. उस समय हम कहीं रुके ना बीच में अटके नहीं. और बीच बीच में रुक कर बच्चों से सवाल पूछे ताकि हमे भी पता चले कि बच्चे कहानी से कितना जुड़ रहे हैं कितना साथ चल पा रहे हैं.कहानी सुनने में मजा आ रहा है या नहीं. कहानी का लेसन प्लान उद्देश्य के हिसाब से हो सकता है." - **मुस्कान मंसूरी, सवित्रा भाई फुले फातिमा शेलिक ओपन लाइब्रेरी, भोपाल**

Image: Session in progress in Bhopal Workshop

गुवाहाटी, जिला असम | 1- 3 दिसंबर

इस कार्यशाला के लिए 30 से अधिक एफ.एल.एन पुस्तकालय एक साथ आए। यहां हमने कई और भाषाएं देखीं और अंग्रेजी, हिंदी, असमिया, बांग्ला, संथाली सहित कई भाषाओं में मुख्य प्रशिक्षण देने में कामयाब रहे। भोजपुरी, गारो और खासी. गायन, नृत्य और वादन के साथ-साथ, हमने कार्यशाला की कि क्यों ज़ोर से पढ़ना, पुस्तक वार्ता और कहानी सुनाना जैसी रणनीतियाँ न्याय को बढ़ावा देने के उपकरण हो सकती हैं।

"यह पिछली कार्यशाला से भिन्न थी। भाषा की बाधा कम हो गई, इतनी सारी भाषाएँ सुनकर अच्छा लगा। ज़ोर से पढ़ने के बारे में सीखना नया था, मैं इसे आज़माना चाहता हूँ। कार्यशाला लंबी होनी चाहिए और इसमें अन्य पुस्तकालयों का एक्सपोज़र दौरा भी शामिल होना चाहिए" - **बीकू, चंद्रप्रभा सैकियानी नारीवादी पुस्तकालय और संसाधन केंद्र, असम**

"यहाँ आने के बाद से किताबों के प्रति मेरा दृष्टिकोण बदल गया है। अपना लाइब्रेरी कार्ड बनाने के बाद मैंने एक किताब पढ़ी और फिर मुझे और पढ़ने की इच्छा हुई। ये हुआ वर्कशॉप के दौरान. मैं इसे एक आन्दोलन के रूप में देखता हूँ। कभी-कभी हम इसे अपने पुस्तकालयों तक ही सीमित रखते हैं, लेकिन अब मैं इसे एक आंदोलन के रूप में देख रहा हूं।" - **सुजीत, प्रयासन, पश्चिम बंगाल**

छवि: गुवाहाटी कार्यशाला से समूह तस्वीर

"लाइब्रेरी में मेरी यात्रा लंबी नहीं रही है लेकिन एफएलएन ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं नेटवर्क के माध्यम से लोगों से जुड़ा हूं इसलिए अब जब भी मैं फंसूंगा तो लोगों तक पहुंच सकता हूं। मुझे उम्मीद है कि हम ऐसी वर्कशॉप करते रहेंगे।' मैं अपनाए गए तरीकों की सराहना करता हूं क्योंकि सभी को भाग लेने का मौका मिला। -**पुलक, मुक्तागर, असम**

छवि: असम कार्यशाला में पढ़ना और चिंतन

लेखक वार्ता | पी साईनाथ से बातचीत | 2 नवंबर 23

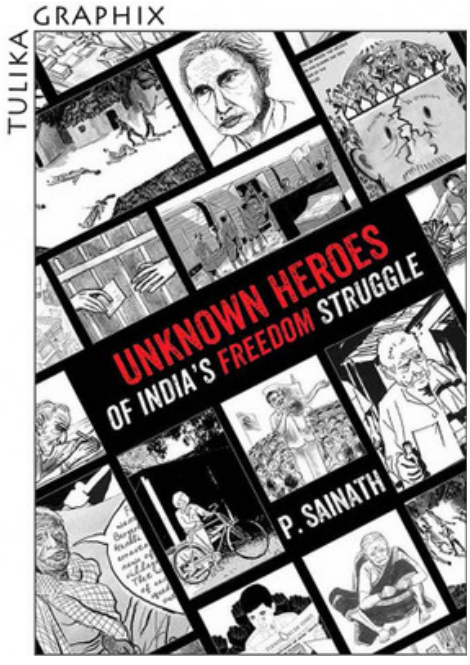

छवि: ग्राफिक उपन्यास का कवर: भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात नायक

हमारी "लेखक टॉक" श्रृंखला के हिस्से के रूप में, एफएलएन सदस्यों ने लेखक पी साईनाथ के साथ एक अद्भुत चर्चा की। मैग्सेसे पुरस्कार विजेता और एवरीवन लव्स ए गुड ड्राउट के लेखक, वह पारी (पीपुल्स आर्काइव ऑफ रूरल इंडिया- ग्रामीण भारत की कहानियों की रिपोर्टिंग करने वाला एक ऑनलाइन मंच) के संस्थापक हैं। इस टॉक की एंकरिंग अमित और ज़ोया ने की और इसमें 600 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस तिमाही की शुरुआत में तुलिका पुस्तकों ने न केवल 60 से अधिक एफएलएन पुस्तकालयों को 100 पुस्तकें भेजीं, बल्कि उन्होंने 16 भारतीय चित्रकारों के सहयोग से पी साईनाथ के नए ग्राफिक उपन्यास "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात नायक" की एक प्रति भी सभी पुस्तकालयों को भेजी। यह पुस्तक पी साईनाथ के पिछले कार्यों (द लास्ट हीरोज़: फ़ुट सोल्जर्स ऑफ़ इंडियाज़ फ्रीडम स्ट्रगल सहित) से ली गई है और इसे सभी के लिए अधिक सुलभ और युवा दर्शकों के लिए भी प्रासंगिक बनाने के लिए तैयार किया गया है। ग्राफिक उपन्यास 12 स्थानीय भारतीय भाषाओं में भी जारी किया जाएगा।

इस बातचीत में, पी साईनाथ ने हमें याद दिलाया कि भारत का निर्माण कैसे हुआ, जन आंदोलन पर, लोगों के संघर्ष पर, कई लोगों के योगदान पर। उन्होंने उपनिवेशीकरण के नुकसान के बारे में बात की और बताया कि कैसे हमारा इतिहास कुछ नेताओं को प्राथमिकता देता है- जबकि दूसरों के योगदान को नजरअंदाज करता है। इस पुस्तक में 15 कहानियों के माध्यम से, हम आज जिस भारत में रहते हैं उसके निर्माण में कई हाशिए पर रहने वाले समुदायों और उनके नेताओं के योगदान का सम्मान करना चाहते हैं।

Image: Screenshot from Meet the Author series: feat P Sainath, Amit Gautham and Zoya

बातचीत और उसके बाद हुए प्रश्नोत्तरी सत्र के दौरान, पी. साईनाथ ने मुक्त पुस्तकालयों की भूमिका, सभी आवाजों के संरक्षक के रूप में पुस्तकालयों की भूमिका, सुनी जाने वाली बातों पर मीडिया/निगमों द्वारा गेटकीपिंग को तोड़ने में पुस्तकालयों की भूमिकाएं, पर चर्चा की। लिखित, निर्मित और वितरित। मौखिक इतिहास की भूमिका, इस पुस्तक के लिए कहानियों को इकट्ठा करने वाले लेखकों के अनुभवों, सामुदायिक पुस्तकालयों के लिए सार्वजनिक वित्त पोषण के विचार आदि सहित कई अन्य दिलचस्प चर्चाएँ भी हुईं। पूरा वीडियो एफएलएन के यू-ट्यूब चैनल पर देखें।

लिंक: पूरी बातचीत https://www.youtube.com/watch?v=epQqJMt9Y-c | **पारी वेबसाइट**: | https://ruralindiaonline.org/en/ | **पुस्तक का लिंक**: https://www.tulikabooks.com/tulika-graphix/unknown-heroes-of-india-s-freedom-struggle.html

एफएलएन थिंकिंग सर्कल 1 | 14 अक्टूबर

फ्री लाइब्रेरीज़ नेटवर्क ने अपने सदस्यों के लिए थिंकिंग सर्कल नामक वेबिनार-सह-सगाई सत्र की श्रृंखला का पहला आयोजन किया। यह सभी एफएलएन पुस्तकालयों के लिए एक साथ आने और नि-शुल्क , सामुदायिक पुस्तकालयों की भूमिका के बारे में अधिक गहराई से सोचने का अवसर है जो हमारे देश में सभी के लिए सुलभ हैं। अंततः, एफएलएन चाहता है कि उसके सभी पुस्तकालयाध्यक्ष सामुदायिक पुस्तकालयों में विचारशील नेता के रूप में उभरें।

पहला चिंतन चक्र "हमें राष्ट्रीय पुस्तकालय नीति के बारे में क्यों सोचना चाहिए?" पर चिंतन था। संविधान के तहत मौलिक अधिकारों पर चर्चा हुई, कैसे पुस्तकालय इन अधिकारों को पूरा करने के स्थान हैं, और एक संवैधानिक अधिकार के रूप में पुस्तकालयों तक पहुंच की फिर से कल्पना कैसे की जाए। हमने साथ मिलकर यह भी सोचा कि राज्य में सभी के लिए निःशुल्क, न्यायसंगत और समावेशी पुस्तकालय बनाने के लिए हम सरकारी नीति से क्या चाहते हैं।

सभी सदस्यों ने अपने-अपने पुस्तकालयों में जिन चुनौतियों का सामना किया है, उनके आधार पर व्यावहारिक लड़ाई प्रदान की। इस फीडबैक को लोगों की लाइब्रेरी नीति में शामिल किया जाएगा जिसे बनाने के लिए एफएलएन वर्तमान में काम कर रहा है।

यह इस तरह के मंचों की श्रृंखला में से पहला था, 2024 में और अधिक की योजना बनाई गई थी।

किताब - कोना

एफएलएन लाइब्रेरीज़ अनुशंसा करती है

कार्यशालाओं में डेमो और शाम की लाइब्रेरी में उपयोग की जाने वाली भारत और दुनिया भर के पुस्तकालयों के बारे में कुछ पुस्तकों का सारांश

हमारी लाइब्रेरी | लेखक: रविराज शेट्टी | चित्र : दीपा बलसावर | प्रकाशक: प्रथम

आपकी लाइब्रेरी कैसी दिखती है? कहानियाँ सुनने की जगह? क्या कोई पुस्तकालय में खेल सकता है? क्या यह केवल वयस्कों के लिए है? केवल बच्चों के लिए? आप लाइब्रेरी में क्या करना पसंद करते हैं. इस पुस्तक में "हमारी लाइब्रेरी" के बारे में पढ़ें - वे चीज़ें जो आप पढ़ सकते हैं, कर सकते हैं और देख सकते हैं।

"गार्डनर इन वेस्टलैंड" (अंग्रेजी में उपलब्ध) **लेखक: श्रीविद्या नटराजन चित्रकार: अपराजिता निन्नन | प्रकाशक: नवयान**

1873 में, जोतीराव गोविंदराव फुले ने गुलामगिरी (गुलामी) लिखी, जो ब्राह्मण मन की कल्पनाओं के रूप में वेदों पर एक तीखा, मजाकिया हमला था, जो शूद्रों और अतिशूद्रों को गुलाम बनाता था। इस पुस्तक में, श्रीविद्या नटराजन और अपराजिता निनान ने प्रतिरोध के घोषणापत्र का निर्माण करने वाले अपने संघर्षों में जोतिबा की साथी सावित्रीबाई की कहानी बुनते हुए, फुले की ग्राफिक कल्पना में ताजा जीवन फूंक दिया।

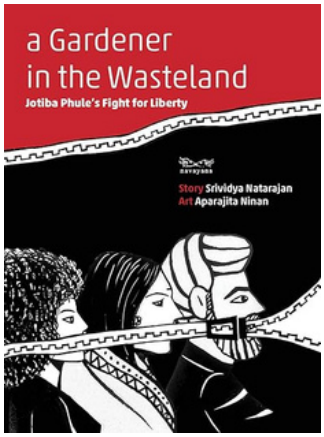

एक किताब पुचकु के लिए
लेखिका: दीपांजना पाल, चित्रकार: राजीव ईपे | प्रकाशक प्रथम

पुचकू के पास पढ़ने के लिए किताबें खत्म हो गई हैं। फिर उसे लाइब्रेरी की किताबों की अलमारी के शीर्ष शेल्फ में और किताबें दिखती हैं। लेकिन पुचकू छोटा है, और किताबों की अलमारी ऊंची है। वह अपनी प्रिय पुस्तकों तक कैसे पहुँच पाएगी?

"थे लाइब्रेरियन ऑफ़ बसरा": लेखक जेनेट विंटर | प्रकाशक: क्लेरियन बुक्स

इराक से, आसन्न युद्ध का सामना करने वाले एक बहादुर लाइब्रेरियन की कहानी और कैसे ज्ञान के प्रति सम्मान की कोई सीमा नहीं होती।

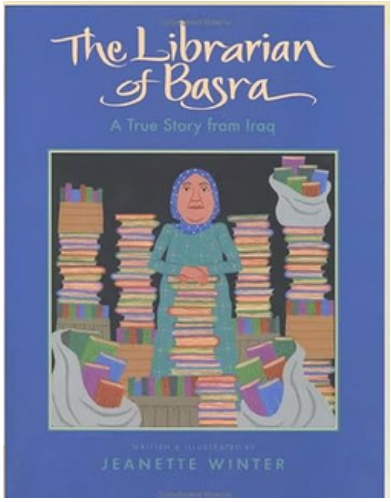

Translation Credits: Dr Amit Yadav
Write to madhumita.rajan@gmail.com with feedback, queries and requests to feature your library or work